प्रभु के लिए सब कुछ दांव पर लगाना (21:1-17)

कई बार मैंने सोचा कि मैं भविष्य में झांकना चाहूंगा; परन्तु विचार करने पर, मैंने यह फैसला किया कि ऐसी योग्यता सम्पत्ति से अधिक दायित्व बन सकती है। यदि मुझे यह पता चल जाए कि मेरे अपने जीवन में क्या दुखद घटना घटित होने वाली है तो? इससे मेरे वर्तमान आनन्द को होने वाली क्षति से बचाना कठिन होगा।

यरूशलेम की ओर जाते हुए, पौलुस को अपने भविष्य के बारे में एक बात का पक्का अनुमान था कि तीसरी मिशनरी यात्रा के अन्त में, कष्ट आएगा! कुरिन्थुस से रोम की कलीसिया को लिखते हुए उसने अपनी यरूशलेम की यात्रा के बारे में बताया और यह बिनती की: ''और हे भाइयो, ... मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिल कर लौलीन रहो कि मैं यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूं ...'' (रोमियों 15:30क, 31क)। मिलेतुस में इफिसुस के प्राचीनों को अलविदा कहते समय उसने कहा:

> और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं (प्रेरितों 20:22, 23)।

पौलुस जानता था कि उसे गिरफ्तार कर लिया जाएगा और यरूशलेम पहुंचने पर उसकी हत्या भी की जा सकती है (21:13)। फिर, वह वहां क्यों गया? वह यह मानता था कि यह प्रभु की इच्छा थी कि वह जाए (19:21; 20:22[1]) और प्रभु के लिए वह सब कुछ दांव पर लगाने को तैयार था।

इस पाठ में, हम यरूशलेम में पौलुस की यात्रा के पूरा होने और जैसे-जैसे वह नगर के निकट आता है वैसे-वैसे बढ़ते तनाव के बारे में देखेंगे। अपने अध्ययन में, हम यह जानेंगे कि पौलुस प्रभु के लिए सब कुछ दांव पर क्यों लगाना चाहता था और हमें भी क्यों अपना सब कुछ प्रभु के लिए दांव पर लगाने का इच्छुक होना चाहिए।

समुद्र से पार जाना (21:1-3)

हमारा पिछला पाठ इफिसियों के प्राचीनों से पौलुस की आंसु भरी विदाई के साथ समाप्त हुआ था। अध्याय 21 का ''जब हमने उन से अलग होकर जहाज़ खोला'' से आरम्भ होता है (आयत 1क)।[2]

लूका ने, जो पौलुस का साथी था, स्पष्टत: यात्रा का विवरण लिखने के लिए एक डायरी रखी होगी। उसने लिखा है कि हम ''सीधे मार्ग से कोस में आए, और दूसरे दिन रुदुस में, और वहां से पतरा में''[3] (आयत 1ख)। लूका पहले दो ठहरावों के बारे में विस्तार से लिख सकता था। कोस का टापू हिपोक्रेतस का जन्म स्थान था और यहां पर संसार का सबसे प्रसिद्ध मेडिकल स्कूल था। रुदुस का टापू गुलाब की खेती (इसी से उसे यह नाम मिला था) और संसार के सात अजूबों में से एक 105 फुट ऊंची द्वीपस्थ अपोलो देव की पीतल की विशाल मूर्ति जो कभी इसकी बन्दरगाह पर टांगें फैलाए खड़ी थी, के लिए प्रसिद्ध था।[4] परन्तु लूका यात्रा पुस्तिका नहीं लिख रहा था। वह पौलुस के पिन्तेकुस्त से पहले यरूशलेम जाने की जल्दी के बारे में बता रहा था (20:16)।[5]

यदि पौलुस जहाज़ में उनके साथ ही रहता जो लगभग हर बन्दरगाह पर रुकते थे तो उन्होंने समय पर यरूशलेम नहीं पहुंच पाना था। जब वे पतरा में उतरे, तो फीनीके को जाने के लिए जहाज़ को तैयार देखकर आनन्दित हुए।[6] फीनीके फलस्तीन के थोड़ा उत्तर की ओर भू-मध्य सागर के पूर्वी किनारे पर है।[7] फीनीके से यरूशलेम को जाना आसान होगा। लूका ने कहा है, ''और एक जहाज फीनीके को जाता हुआ मिला, और उस पर चढ़कर, उसे खोल दिया'' (आयत 2)।

किनारे-किनारे चलने वाले उनके पिछले जहाज़ की अपेक्षा इस जहाज़ ने भू-मध्य सागर से होते हुए सीधे फीनीके में जाना था।[8] रास्ते में, वे कुप्रुस टापू के दक्षिण से होकर गए (आयत 3क) जहां से पौलुस और बरनबास ने लगभग 10 साल पहले अपनी पहली मिशनरी यात्रा आरम्भ की थी (13:4)। परन्तु ''सूर में उतर'' कर (21:3ख) और ''बोझ उतारने'' (आयत 3ग) तक वह जहाज़ रुका नहीं।

सूर में परखे गए (21:4-6)

सूर फीनीके का एक प्राचीन नगर था, जो बाइबल से तथा बाहर के इतिहास दोनों के छात्रों के लिए महत्वपूर्ण स्थान था। सूर के राजा हीराम ने सुलैमान के मन्दिर के निर्माण के लिए देवदार की लकड़ी दी थी (1 राजा 5:10)।[9] यीशु ने अपने प्रचार में सूर का उल्लेख किया (मत्ती 11:21) और सूर के आस-पास के इलाके में वह गया भी (मत्ती 15:21; मरकुस 7:24)।

पौलुस तथा अन्यों द्वारा सताव के कारण यरूशलेम से तितर-बितर हो जाने वाले (प्रेरितों 8:1-4) कुछ मसीही फीनीके में चले गए थे (11:19)। सम्भवत: सूर की कलीसिया तभी स्थापित हुई थी। वर्षों बाद, सीरिया के अन्ताकिया से यरूशलेम जाते समय पौलुस फीनीके से होते हुए, ''अन्यजातियों के मन फिराव का समाचार सुनाते... और सब

भाइयों को बहुत आनन्दित'' (15:3ख) करते हुए गया था। शायद पौलुस को उस समय सूर में कुछ भाई मिले थे।[10]

स्पष्टत: पौलुस के जहाज़ ने भूमध्य सागर में काफी समय लगाया (जॉन क्रिसोस्टोम के अनुसार यात्रा में केवल पांच दिन लगे)। यद्यपि पौलुस अभी भी पिन्तेकुस्त से पहले यरूशलेम में पहुंचने के लिए प्रतिबद्ध था, स्पष्टत: अब उसके पास उनसे बात करने के लिए समय था।[11] सूर में सामान उतारने के लिए उसके जहाज़ को कुछ दिन लग जाने थे, परन्तु उसे उसकी चिन्ता नहीं थी। उसने उस नगर के दूसरे भाइयों के साथ अपने सम्बन्ध मजबूत करने के लिए उस समय का सदुपयोग किया। लूका ने बाद में लिखा, ''और चेलों को पाकर[12] हम वहां सात दिन तक रहे'' (21:4क)।

पहले पौलुस ने उस क्षेत्र में अन्यजातियों के बीच सुसमाचार की सफलता का विवरण देकर भाइयों को रोमांचित कर दिया था; अब वह उन्हें नई ख़बर दे सकता था। सप्ताह के पहले दिन प्रभु की मेज के पास इकट्ठे होना उनकी संगति के लिए उत्कृष्ट समय था।[13]

एक चिन्ता ने उन्हें इकट्ठा कर दिया: ''उन्होंने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा, कि यरूशलेम में पांव न रखना'' (आयत 4ख)। स्पष्टत: सूर में एक या अधिक भाइयों को भविष्यवाणी का दान मिला था और वे पौलुस को उन ख़तरों से सावधान करते रहे जो उस पर आने वाले थे (देखिए 20:23; 21:10, 11)।

यदि मैं पौलुस की जगह होता, तो मैं भविष्य की चिन्ता छोड़कर अपने भाइयों की संगति में रहने की इच्छा करता, परन्तु आत्मा ने उसे ऐसा नहीं करने दिया। हर शहर में पवित्र आत्मा ने इस प्रेरित को याद दिलाने के लिए लोगों को प्रेरणा दी कि ''बन्धन और क्लेश'' उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं (20:23)। अपने मिशन को आगे ले जाने के निश्चय के लिए पौलुस की यह कितनी बड़ी परीक्षा होगी!

सूर के भाइयों द्वारा पौलुस को दी गई चेतावनी ''कि यरूशलेम में पांव न रखना'' पर ध्यान दें। मुझे संदेह है कि यह विशेष चेतावनी पवित्र आत्मा की ओर से नहीं थी, इसके दो कारण थे: (1) पौलुस हमेशा आत्मा के निषेधों की ओर ध्यान देता था (16:6-8)। यदि आत्मा पौलुस को यरूशलेम में न जाने के लिए स्पष्ट बता देता, तो पौलुस अवश्य ही उन निर्देशों का पालन करता। (2) पौलुस स्पष्टत: अपने आपको यरूशलेम में जाने के लिए ईश्वरीय आदेशों के अधीन समझता था,[14] और आत्मा ने अपना ही विरोध नहीं करना था। मेरा मानना है कि पवित्र आत्मा ने सूर के भाइयों पर यह प्रकट कर दिया था कि पौलुस पर यरूशलेम में कष्ट आएंगे, और यह उनका *अपना* निष्कर्ष था कि उसे वहां नहीं जाना चाहिए।[15] आत्मा की चेतावनी का इरादा *रुकावट* डालना नहीं बल्कि *तैयारी* करवाना था ताकि पौलुस तैयार हो सके कि यरूशलेम में उसके साथ क्या हो सकता है।

सूर में एक सप्ताह जल्दी ही बीत गया। यद्यपि पहले पौलुस ने वहां के मसीहियों के साथ बहुत कम समय तक रहने का आनन्द लिया था परन्तु इन सात दिनों की संगति के बाद वह उनका घनिष्ठतम मित्र बनकर विदा हुआ। ऐसा परमेश्वर के परिवार में उनके होने के कारण हुआ था।[16] मिलेतुस में आंसु भरी विदाई का यह दृश्य स्मरणीय है:

> जब वे दिन पूरे हो गए, तो हम वहां से चल दिए; और सब ने स्त्रियों और बालकों समेत[17] हमें नगर के बाहर तक पहुंचाया और हम ने किनारे पर घुटने टेककर[18] प्रार्थना की।[19] तब एक दूसरे से विदा होकर, हम तो जहाज पर चढ़े, और वे अपने-अपने घर लौट गए[20] (21:5, 6)।

वहां के पूरे के पूरे परिवार पौलुस और उसके साथियों को अलविदा कहने आए। प्रभु के लिए अपना सब कुछ जोखिम में डालने की इच्छा रखने वालों को अलविदा कहने आए पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों की आंखों में आंसू थे।

करुणामय लोगों द्वारा स्वागत

(21:7)

सूर से चलकर उनका जहाज़ कार्मेल पहाड़ के उत्तर की ओर लगभग दस मील पर फीनीके की दक्षिणी बन्दरगाह पतुलिमयिस में पहुंचा।[21] पतुलिमयिस नाम की रोमी कॉलोनी,[22] को पुराने नियम के समयों में ''अक्को'' कहा जाता था (न्यायियों 1:31)। बाद में मिसर के पतुलमी द्वितीय ने इसका दूसरा नया नाम रख दिया था। इस नगर में एक छोटी सी मण्डली एकत्र होती थी जो सम्भवत: उसी समय बनी थी जिस समय सूर की मण्डली (प्रेरितों 11:19) बनी थी।

लूका ने लिखा है, ''तब हम सूर से जलयात्रा पूरी करके[23] पतुलिमयिस में पहुंचे, और भाइयों को नमस्कार करके उनके साथ एक दिन रहे'' (आयत 7)। लूका की भाषा से पता चलता है कि जब पौलुस का जहाज़ पतुलिमयिस में रुका तो ये भाई उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे[24] और इन यात्रियों को अपने साथ घर ले गए।

यदि 21:1-17 का मुख्य शीर्षक प्रभु के लिए सब कुछ दांव पर लगाने की पौलुस की इच्छा है, तो इसका लघु शीर्षक आरम्भिक मसीहियों की इकट्ठा होने की चाह है। 20 और 21 अध्यायों को पढ़कर मैं पौलुस के उस प्रयास से इतना प्रभावित होता हूं जिसका इस्तेमाल उसने हर नगर में मसीहियों को ढूंढने के लिए किया। उन भाइयों के अतिथि सत्कार से भी मैं उतना ही प्रभावित हूं। स्पष्ट है कि नौ या अधिक अनापेक्षित भाइयों के आने को[25] बोझ नहीं समझा गया। मैं पतुलिमयिस के मसीहियों को यह ज़ोर देते हुए सुन सकता हूं, ''यदि तुम हमें प्रभु के विश्वासी समझते हो, तो चलकर हमारे घरों में रहो'' (देखिए 16:15)।[26]

मैं सूर और पतुलिमयिस के भाइयों की उनके करुणामय अतिथि सत्कार के लिए सराहना करता हूं। मैं विशेषकर उनकी करुणा की सराहना यह जानकर करता हूं कि उन नगरों की कलीसियाएं उस क्रूर सताव का परिणाम थीं जिसमें पौलुस ने भाग लिया था (8:1-4; 11:19)। जब यह पूर्व अत्याचारी उनके द्वार पर आया, तो उन्होंने पिछले दुर्व्यवहार को वर्तमान संगति पर हावी नहीं होने दिया उन्होंने पौलुस और उसके मित्रों

का स्वागत किया।

मसीही होने की आशिषों में से एक आशीष अन्य मसीहियों से मिलना है। जब मसीही लोग कहीं जाने पर ''भाइयों को ढूंढ़ते'' नहीं हैं तो वे अपने आपको बहुत सी आशिषों से वंचित कर लेते हैं!

हमारे पाठ में, मुख्य तथा लघु शीर्षक परस्पर विरोधाभासी नहीं हैं। प्रभु के लिए सब कुछ जोखिम में डाल देने की पौलुस की इच्छा का एक कारण अपने भाइयों के लिए उसका प्रेम था। वह यरूशलेम जा रहा था क्योंकि उसे आशा थी कि उसके जाने से यहूदी और अन्यजाति मसीहियों में तनाव कम होगा (रोमियों 15:22-33)। यीशु की तरह, वह ''अपने मित्रों के लिए अपना प्राण'' (यूहन्ना 15:13ख) देने को तैयार था।

कैसरिया में दुखी हुआ (21:8-14)

पौलुस और उसके साथी पतुलिमयिस के बाद, दक्षिण की ओर फलस्तीन की प्रमुख बन्दरगाह[27] कैसरिया (आयत 8क)[28] में चले गए, जहां पहले पतरस ने अन्यजातियों में सुसमाचार का प्रचार किया था (अध्याय 10 और 11)।[29] बाद में पौलुस को दो साल की कैद होने से, नगर को अतिरिक्त महत्व मिल गया (23:31-35; 24:27)। परन्तु, हमारी कहानी तक यरूशलेम पहुंचने से पहले कैसरिया केवल पौलुस का अन्तिम बड़ा ठहराव था।

कैसरिया यरूशलेम से साठ मील से थोड़ा अधिक दूर था वहां से लगभग दो दिन की यात्रा बाकी थी। यरूशलेम में पिन्तेकुस्त का पर्व मनाने के लिए निकलने से पहले पौलुस इस नगर में कई दिन तक रहा (21:10[30])। उसकी यात्राओं के दौरान उसका मेज़बान सबसे असाधारण लोगों में से था। लूका ने कहा है, ''... हम ... कैसरिया में आए, और फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक के घर में जो सातों में से एक था,[31] जाकर उसके यहां रहे'' (आयत 8ख)।

''फिलिप्पुस सुसमाचार प्रचारक'' से पहले हम अध्याय 6 में मिले थे जहां वह खिलाने-पिलाने की सेवा के लिए चुने जाने वाले सात पुरुषों में से एक था (6:1-6)। जब मसीही लोगों को यरूशलेम से निकाला गया था, तो वह सुसमाचार का प्रचार करने के लिए उत्तर की ओर सामरिया में चला गया था (8:4-13)। उसके बाद वह खोजे को वचन सुनाने के लिए दक्षिण की ओर गया (8:26-39)। फिर वह उत्तर में फलस्तीनी तट के साथ-साथ ''जब तक कैसरिया में न पहुंचा, तब तक नगर-नगर सुसमाचार सुनाता गया'' (8:40ख)। स्पष्टत:, वह कैसरिया में घर बसाकर अपने परिवार सहित वहीं रहने लगा।[32]

फिलिप्पुस को ''सुसमाचार प्रचारक अर्थात इवैंजलिस्ट''[33] कहा जाता था क्योंकि यह उसका मुख्य कार्य था। नये नियम में तीन में से एक यह स्थान है जहां पर ''सुसमाचार प्रचारक'' शब्द मिलता है (इफिसियों 4:11; 2 तीमुथियुस 4:5 भी देखिए)। अंग्रेजी शब्द ''इवैंजलिस्ट'' ''सुसमाचार'' के लिए यूनानी शब्द का रूपान्तरण है। इस शब्द का मूल

अर्थ ''सुसमाचार सुनाने वाला'' है, अर्थात ''जो शुभ समाचार का प्रचार करता है।''[34] इस शब्द का क्रिया रूप प्रेरितों 8:40 में मिलता है, जहां पर फिलिप्पुस ''नगर-नगर *सुसमाचार* सुना रहा था।''

फिलिप्पुस पौलुस के सबसे असाधारण मेजबानों में से था क्योंकि पौलुस पर संदेह या उसका विरोध करने का यदि किसी के पास कोई कारण था, तो वह फिलिप्पुस था। वह स्तिफनुस का सहकर्मी था (6:5), जिसकी हत्या करने में मसीही बनने से पहले पौलुस ने सहयोग दिया था। वह उनमें से एक था जो पौलुस के डर से यरूशलेम से भाग गए थे (8:1-5)। एक बार फिर, फिलिप्पुस द्वारा पौलुस और उसके सहयात्रियों को अपने घर आने का निमन्त्रण देने में हमें मसीही करुणा दिखाई देती है।

आयत 9 में लूका ने फिलिप्पुस के जीवन पर एक दिलचस्प टिप्पणी जोड़ दी: ''उस की चार कुंवारी[35] पुत्रियां थीं; जो भविष्यवाणी करती थीं।'' पिन्तेकुस्त के दिन अपने संदेश में, पतरस ने योएल 2 से उद्धृत किया था, जहां परमेश्वर ने वायदा किया था, ''... कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यवाणी करेंगी ...'' (प्रेरितों 2:17)। ''भविष्यवाणी'' करने का अर्थ आत्मा की प्रेरणा से परमेश्वर के लिए बोलना था;[36] भविष्यवाणी का दान प्रेरितों के हाथ रखने से पुरुषों तथा महिलाओं दोनों को ही दिया जाता था (1 कुरिन्थियों 11:4, 5)। महिलाएं इस दान का इस्तेमाल सार्वजनिक आराधना सभा में नहीं करती थीं (1 कुरिन्थियों 14:23, 31-37) (अर्थात, वे प्रचार नहीं करती थीं[37]), परन्तु इस दान का इस्तेमाल अधिकतर असार्वजनिक तौर पर किया जा सकता था।

लूका ने फिलिप्पुस की पुत्रियों के बारे में इस विवरण का उल्लेख क्यों किया?[38] कई लोगों का अनुमान है कि इन चार महिला भविष्यवक्ताओं ने यह पुष्टि की थी कि यरूशलेम में पौलुस पर कष्ट आएंगे। अन्य टिप्पणी करते हैं कि, आरम्भिक मसीही लेखों के अनुसार इन पुत्रियों में से कुछ कलीसिया में आरम्भिक इतिहास के बारे में जानकारी देने के लिए प्रसिद्ध स्रोत थीं। फिर वे अनुमान लगाते हैं कि मसीह और कलीसिया पर लूका के काम की दो पुस्तकों का मुख्य स्रोत वही थीं (देखिए लूका 1:3)।[39]

पौलुस के फिलिप्पुस के घर में रहते हुए, एक बार फिर आगे आने वाली बातों से शांति भंग हो गई। यह सूचना सबसे अधिक नाटकीय थी। ''जब हम वहां बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नामक एक भविष्यवक्ता यहूदिया से आया'' (प्रेरितों 21:10)। ''अगबुस'' कोई साधारण नाम नहीं था, सो सम्भवत: यह यरूशलेम का वही नबी था जिसने पहले भविष्यवाणी की थी ''कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा'' (11:28ख)। इस बार वह विश्वव्यापी संकट की भविष्यवाणी करने नहीं, बल्कि व्यक्तिगत अर्थात पौलुस के संकट की भविष्यवाणी करने आया था। उसने पुराने नियम के एक भविष्यवक्ता की तरह दिखाकर समझाते हुए अपनी बात को पक्का बताया।[40]

> उसने हमारे पास आकर पौलुस का पटका लिया,[41] और अपने हाथ-पांव बान्धकर कहा; पवित्र आत्मा यह कहता है, कि जिस मनुष्य का यह पटका है, उसको यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्यजातियों के हाथों में सौंपेंगे (21:11)।

अगले पाठों में, हम इस भविष्यवाणी को पूरा होते देखेंगे। यहूदियों ने पौलुस को अन्यजातियों को सौंपने की *मंशा से* नहीं बल्कि कत्ल करने की मंशा से बांधा था, परन्तु हम देखेंगे कि अन्यजातियों (अर्थात रोमी सिपाहियों) ने पौलुस को भीड़ से बचा लिया था। इसलिए, भविष्यवाणी के शब्दों का अर्थ अवश्य ही यह था कि यहूदियों द्वारा पौलुस को बान्धना उसके अन्यजातियों के हाथों पड़ने का *कारण* बनना था। यदि ऐसा था, तो लूका ने ऐसी शब्दावली का इस्तेमाल क्यों किया? सम्भवत:, वह पौलुस और यीशु की अपने लिए की गई भविष्यवाणी में समानता ढूंढ़ रहा होगा कि यरूशलेम में उसके साथ क्या-क्या होगा (लूका 18:32)।

अगबुस के आने से पहले, लूका और पौलुस के अन्य सहयात्रियों ने उसे जाने से मना करने वालों का साथ नहीं दिया था। परन्तु, यरूशलेम के निकट आने पर वे अधिक आशंकित हो गए थे। यरूशलेम से साठ या कुछ अधिक मील दूर होने पर, अगबुस की घोषणा ने उन्हें किनारे पर खड़ा दिया था। लूका और दूसरे लोग यह बिनती करते हुए उनके सुर में सुर मिलाने लगे, ''मत जाओ! मत जाओ!'' लूका ने माना है, ''जब ये बातें सुनीं, तो हमने और वहां के लोगों ने उस से बिनती की, कि यरूशलेम को न जाए'' (प्रेरितों 21:12)। मैं उनमें हुई बहस की कल्पना करता हूं, ''यरूशलेम का रास्ता अब केवल दो ही दिन का है। चन्दा लाना है, वह हम भी ला सकते हैं। तुम अपने आपको संकट में मत डालो!'' उन्होंने भविष्यवाणी को ध्यान से नहीं सुना था। पवित्र आत्मा ने यह नहीं कहा था कि, ''यदि पौलुस जाए, तो उसके साथ यह होगा।'' बल्कि, वास्तव में आत्मा ने कहा था, ''ऐसा *होगा।*'' वे पौलुस से न जाने की बिनती करके उसे परमेश्वर को झूठा बनाने के लिए कह रहे थे।

पौलुस के आस-पास ऐसे लोग थे जो उसे प्यार करते थे, हर कोई उससे न जाने का आग्रह कर रहा था। उसका प्रिय मित्र लूका भीगी आंखों से बिनती कर रहा था; तीमुथियुस डबडबाई आंखों से उसे देख रहा था। सब एक सुर में बोल रहे थे। यह सब प्रेरित की सहनशक्ति से बाहर हो गया था। पौलुस दुहाई देकर चिल्लाया: ''तुम क्या करते हो, कि रो रोकर मेरा मन तोड़ते हो, मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में न केवल बान्धे जाने ही के लिए वरन मरने के लिए भी तैयार हूं''[42] (आयत 13)। यूनानी अनुवादित शब्द ''तोड़ते'' का अर्थ ''पीस कर चूर्ण बनाना'' है। यदि वे उसे जाने से मना करके उसे उसके उद्देश्य से भटका सकते थे।

पौलुस परमेश्वर के साथ की गई अपनी प्रतिबद्धता से मुड़ने ही वाला था, क्योंकि उसके मित्र उससे अपनी वचनबद्धता को पूरा न करने की बिनती कर रहे थे। ऐसा उन्होंने

बुरे उद्देश्य से नहीं किया था; उन्हें तो केवल पौलुस की चिन्ता थी। परन्तु पौलुस की दिलचस्पी परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को पूरा करने में थी।

प्रभु के लिए अपना सब कुछ दांव पर लगाने पर (और आप में बहुत से ऐसा करते भी हैं), यदि आपके मित्र आपको पागल कहें और आपसे इस प्रतिबद्धता को छोड़ने का आग्रह करें, तो हैरान न हों। हो सकता है इन मित्रों में से कई आपके उतने ही निकट हों जितने लूका और तीमुथियुस पौलुस के निकट थे। मैं ऐसे युवकों को जानता हूं जो तब तक प्रचार करने की इच्छा रखते थे जब तक उनका भला चाहने वाले मित्रों ने उन्हें मना नहीं किया। मैं ऐसे पुरुषों और महिलाओं को जानता हूं जिन्होंने अपनी शादी की समस्याओं से जूझते हुए काम करने का जब दृढ़ निश्चय किया तो उनके मित्रों ने उन्हें यह नहीं समझाया कि उन्हें ''अब उन अपमानों को सहने की आवश्यकता नहीं।'' मैं उन लोगों को भी जानता हूं जिनके मन में अन्य देशों में जाकर किसी मित्र द्वारा मना करने तक खोए हुओं को सिखाने का बोझ था। इनमें से बहुत से मित्रों का उद्देश्य बुरा नहीं था; उनकी दिलचस्पी तो केवल उन लोगों में थी जिनसे वे प्रेम करते थे। जो बात उन्हें समझ नहीं आई वह यह है कि एक मसीही के लिए व्यक्तिगत लाभ उतना महत्व नहीं रखता है जितना कि प्रभु के प्रति प्रतिबद्धता में उसका विश्वासी होना। जब आप परमेश्वर के साथ कोई ऐसी प्रतिज्ञा करते हैं जिसमें जोखिम होता है, तो अपने आपको उसके हाथों में सौंप कर बाकी सब कुछ उस पर छोड़ दें। मित्रों को अपने उद्देश्य को कमज़ोर करने की अनुमति न दें।[43]

जब आप सब कुछ प्रभु के लिए दांव पर लगा दें और मित्र आपको रोकने में असमर्थ हों, तो मुझे आशा है कि उसके बाद जो होगा वह बिल्कुल वैसा ही होगा जो हमारे पाठ में हुआ। जब लूका और बाकी लोगों ने देखा कि ''उसने नहीं माना'' तो वे यह कहकर ''चुप हो गए; कि प्रभु की इच्छा पूरी हो''[44] (आयत 14)।

आज कुछ लोग सिखाते हैं कि परमेश्वर के लोग कभी भूखे नहीं रहेंगे, बीमार नहीं होंगे और उन पर कोई कष्ट नहीं आएगा, परन्तु यह उसकी इच्छा थी कि पौलुस यरूशलेम को जाए, चाहे उस पर वहां कितने ही कष्ट आने वाले थे। कई बार बड़े उद्देश्यों के लिए निजी लाभ का बलिदान जरूरी हो जाता है। पौलुस के यरूशलेम में जाने और वहां पर उसके गिरफ्तार होने में परमेश्वर का क्या उद्देश्य हो सकता है? मैं दो उद्देश्यों का सुझाव देता हूं:

पहला, पौलुस के लिए (ख़तरे के बावजूद) बहुत पहले पतरस से किया गया वायदा निभाने के लिए यरूशलेम में जाना जरूरी था। पतरस ने पौलुस से ''निर्धनों को स्मरण'' रखने के लिए कहा था (जिसका अर्थ यरूशलेम और यहूदिया के निर्धन थे), और पौलुस ने कहा था कि वह रखेगा (गलतियों 2:10)। देर तक वह अपना वायदा निभा रहा था। आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वहां बैठे-बिठाए चन्दा लाने का कोई और ढंग नहीं था।[45] जैसे पहले सुझाव दिया गया है, पौलुस भाइयों में *मेल* करवाने के लिए अपना प्राण जोखिम में डाल रहा था।

दूसरा, पौलुस के लिए बीस साल पहले बन्धने (''बन्धना'' = गिरफ्तार होना) के

लिए उससे किए गए वायदे का पूरा करना आवश्यक था। पौलुस के मनपरिवर्तन के बाद, यीशु ने कहा था, ''... यह तो अन्यजातियों *और राजाओं* और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है'' (प्रेरितों 9:15)। पिछले दो दशकों से पौलुस ने हज़ारों अन्यजाति लोगों में प्रचार तो किया था परन्तु उसमें कोई राजा नहीं था। वह वायदा कैसे पूरा हो सकता था? यह तो सम्भव नहीं था कि कोई राजा पौलुस की बातों को सुनने के लिए आए या उसे किसी राजा के महल में आने का शाही आदेश दिया जाए। परमेश्वर ही ऐसा प्रबन्ध कर सकता था जिसमें यीशु का वायदा पूरा हो जाता? उसने पौलुस की गिरफ्तारी की अनुमति दे दी। अगले पाठों में, हम पौलुस को कई बार राजाओं के सामने अपने जीवन का मुकदमा रखते हुए एक कैदी के रूप में प्रचार करते देखेंगे! क्या परमेश्वर के ढंग अद्‌भुत नहीं हैं?

यरूशलेम को जाना (21:15-17)

आयत 15 में लूका ने लिखा है, ''उन दिनों के बाद [कैसरिया में रहने और भावनात्मक शोर-शराबे के दिन] हम बान्ध छान्ध कर यरूशलेम को चल दिए।'' यूनानी शब्द का अनुवाद ''बान्ध छान्ध कर'' का साधारण अर्थ सामान बान्धना है, परन्तु इसका तात्पर्य यह भी हो सकता है कि लूका और बाकी लोगों ने जाने के लिए अपने *मन* बना लिए थे अर्थात उन्होंने आने वाली किसी भी बात के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया था।

कैसरिया से कुछ चेले उनके साथ हो लिए (आयत 16क)। शायद उनमें से कुछ यहूदी थे जो पर्व के समय जाना चाहते थे, परन्तु उनका मुख्य उद्देश्य था कि पौलुस और दूसरे लोग ''मनासोन नाम कुप्रुस[46] के एक पुराने चेले[47]... के यहां टिकें'' (आयत 16ख)।[48] यरूशलेम में पर्व के दिनों में जब नगर में लाखों श्रद्धालु उमड़ पड़ते थे , तो ठहरने का स्थान मिलना लगभग असम्भव हो जाता था। लोगों के ऐसे दल के लिए वहां ठहरना और भी कठिन था जिसमें यरूशलेम का सबसे बदनाम आदमी शामिल था (21:20-22, 27, 28) और उसके साथ कम से कम सात नीच अन्यजाति भी थे।[49] मनासोन के पास पौलुस के साथियों को ठहराने के लिए काफ़ी बड़ा घर था और वहां ठहरने का निमन्त्रण देने के लिए विशाल हृदय भी था।[50] इस कारण पौलुस और उसके मित्र यरूशलेम में आ गए (आयत 17)।

बहुत से लेखकों ने यरूशलेम में यीशु और पौलुस की अन्तिम यात्रा के लूका के विवरणों में समानताओं पर टिप्पणी की है। लूका 9:51 में यीशु के विषय में हम पढ़ते हैं: ''... उसने यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया।''[51] यीशु को पता था कि यरूशलेम में उसके साथ क्या होने वाला है (लूका 18:31-33), परन्तु यह जानते हुए कि यह प्रभु की इच्छा थी वह वहां गया। उसी प्रकार, पौलुस ने ''यरूशलेम जाने का विचार दृढ़ किया'' और उसे कोई रोक नहीं सकता था।

सारांश

कुछ सीमा तक, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने में जोखिम तो रहता ही है। परमेश्वर कभी भी आसान काम करने के लिए नहीं देता। मसीहियत डरपोक लोगों के लिए नहीं है। रोमांच ढूंढ़ते हुए अन्त में थक जाने वाले लोगों के विपरीत, परमेश्वर के लिए उठाये गए जोखिम किसी भी प्रकार जोखिम नहीं होते, क्योंकि वह हमें कभी नहीं छोड़ता और हमेशा हमारे साथ काम करता रहता है। हम पढ़ते हैं:

> उसने आप ही कहा है, तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा। इसलिए हम बेधड़क होकर कहते हैं, कि प्रभु, मेरा सहायक है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है? (इब्रानियों 13:5ख, 6)।

> और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें मिलकर भलाई को ही उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिए जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं (रोमियों 8:28)।

यदि आपको भी जीवन में वैसी ही धमकी का सामना करना पड़े जैसी पौलुस को मिली थी, तो भी आप इस विश्वास के साथ मृत्यु का सामना कर सकते हैं कि ''तुम हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के अनन्त राज्य में बड़े आदर के साथ प्रवेश करने पाओगे'' (2 पतरस 1:11)। यदि आप विश्वासी मसीही हैं, तो घाटे में नहीं रहोगे।

आप उस सबसे ख़तरनाक जोखिम के बारे में जानते हैं जो कोई व्यक्ति उठा सकता है? वह जोखिम परमेश्वर की इच्छा की आज्ञा मानने से इन्कार करना है! आप में से कई लोग जानते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि आप यीशु में विश्वास का अंगीकार करके बपतिस्मा लें परन्तु आपके मित्रगण किसी और बात को मनाने की कोशिश कर रहे हैं, जैसे पौलुस के मित्रों ने उसे यरूशलेम जाने से रोकने की कोशिश की थी। अपने जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने से रोकने की कभी किसी को बात भी न करने दें! अपनी अविनाशी आत्मा को दांव पर न लगाइए! आज ही प्रभु की बात मान लें।

विज़ुअल-एड नोट्स

यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल कक्षा में करते हैं, तो आप ध्यान खींचने वाले इस ढंग का इस्तेमाल कर सकते हैं: कक्षा में एक बैल्ट लाएं (जितनी चौड़ी हो उतनी ही अच्छी है)। कक्षा के आरम्भ में इसे पकड़कर कहें, ''अलग-अलग लोगों के लिए यह अलग-अलग बातों को दर्शाती है। आदमी के लिए, यह पैंट को कसने के लिए है। बच्चे के लिए, यह माता-पिता की ओर से मिलने वाली सज़ा हो सकती है। परन्तु, पौलुस के लिए यह गिरफ्तारी का संकेत था!'' दिखाएं कि अगबुस ने पौलुस की बैल्ट अर्थात पटके का इस्तेमाल कैसे किया।

प्रवचन नोट्स

यदि आपने '' प्रेरितों के काम, भाग-2'' से ''आप किसके लिए मरेंगे ?'' पाठ का इस्तेमाल नहीं किया, तो इस अध्ययन के सम्बन्ध में इस पाठ का इस्तेमाल करके इसे ''आप किसके लिए मरना चाह रहे हैं ?'' नाम दिया जा सकता है। सदियों से लोग बहुत से महान (और तुच्छ) कारणों से मरने की इच्छा करते रहे हैं। पौलुस भाइयों में मेल करवाने के लिए मरना चाहता था। अपने सुनने वालों से पूछें '' *आप* किसके लिए मरना चाहते हैं ?''

पाद टिप्पणियां

[1]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''जब मसीहियत बटुए पर प्रहार करती है'' तथा ''प्रचारकों, प्राचीनों तथा अन्य पापियों के लिए एक प्रवचन'' में प्रेरितों 19:21 और 20:22 पर नोट्स देखिए। [2]पौलुस को कई बार एक गम्भीर, अलग रहने वाले व्यक्ति के रूप में दिखाया जाता है। ऐसे गुणों वाला व्यक्ति लोगों के मनों को ऐसे नहीं हिला सकता था जैसे पतरस को जानने वालों के मन घबरा गए थे। [3]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिए। [4]पौलुस के जाने तक, एक भूकंप के कारण यह मूर्ति टूट गई थी, परन्तु इस विशाल अजूबे के खंडहर अभी भी आकर्षण का केन्द्र बने हुए थे। [5]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' में ''प्रचारकों, प्राचीनों तथा अन्य पापियों के लिए एक प्रवचन'' में प्रेरितों 20:16 पर नोट्स देखिए। [6]यह जहाज सम्भवत: उस जहाज से बहुत बड़ा था जिसमें वे बैठे थे। इसे खाली करने में सात दिन लगे (पद 3-6)। [7]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिए। [8]आयत तीन में लूका ने कहा कि वे जहाज से ''सूरिया को'' जा रहे थे। फीनीके देश सूरिया के रोमी राज्य का इलाका था। [9]सूर के लिए पुराने नियम के अन्य हवालों के लिए, यशायाह 23; यहेजकेल 26-28; आमोस 1:9, 10 की भविष्यवाणियां देखिए। [10]यह भी सम्भव है कि सीरिया के अंताकिया से यरूशलेम के लिए परोपकारी सहायता लेने के समय पौलुस और बरनबास सूर के कुछ भाइयों से मिले हों (11:27-30; 12:25)।

[11]इसके बाद, पौलुस कभी भी जल्दी में नहीं लगा। इसका उदाहरण आप किसी ऐसे समय के लिए प्रयुक्त कर सकते हैं जब आपने किसी को दिए समय के कारण जल्दी की, परन्तु बाद में पता चला कि आप तो समय से पहले पहुंच गए थे। [12]यूनानी शब्द के अनुवाद ''को पाकर'' का अर्थ परिश्रम से खोजना है। सूर शहर बहुत बड़ा था, जबकि कलीसिया सम्भवत: छोटी थी। [13]वे सूर में पूरा सप्ताह रहे, इसलिए वे सप्ताह के पहले दिन वहां थे और इसलिए, उन्होंने प्रभु भोज लिया होगा। (''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''सोने वाले चेले'' में प्रेरितों 20:7 पर नोट्स देखिए)। [14]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''जब मसीहियत बटुए पर प्रहार करती है'' और ''प्रचारकों, प्राचीनों तथा अन्य पापियों के लिए एक प्रवचन'' में प्रेरितों 19:21 और 20:22 पर नोट्स देखिए। [15]आयत 11 में आत्मा के लिए प्रयुक्त सही-सही शब्द देखिए। उन शब्दों से भविष्यवाणी हुई कि पौलुस के साथ क्या होगा परंतु उनमें पौलुस के लिए यरूशलेम न जाने का निर्देश *नहीं* था। [16]किसी ऐसे समय की बात बताएं जब पहली बार मिलने वाले मसीही कई दिन तक मिलजुल कर रहने लगे, और बिछुड़ने के समय उनकी आंखों से आंसू छलक रहे थे। [17]मंडली के कार्यों के संदर्भ में प्ररितों के काम में यहां पर पहली बार बच्चों का उल्लेख हुआ है। [18]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''प्रचारकों, प्राचीनों तथा अन्य पापियों के लिए प्रवचन'' में 20:36 पर नोट्स देखिए। [19]इसे ''समुद्र तट पर प्रार्थना सभा'' कहा जाता है। [20]कई लोगों को यहां पर एकांत का संकेत लगता है और वे इसका अर्थ विरोधाभास निकालते हैं: ''हम खतरा उठाने के लिए जहाज पर बैठ गए जबकि सुरक्षित रहने के लिए 'वे अपने घर लौट गए।'''

[21]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिए। [22]''प्रेरितों के काम, भाग-3'' के पाठ ''परमेश्वर की बुलाहट को स्वीकार करना'' में पाद टिप्पणी 18 देखिए। [23]कई लोगों का विचार है कि जहाज पतुलिमयिस तक ही गया और पौलुस व दूसरे लोगों ने आगे भी पैदल ही यात्रा की। [24]पौलुस ने इन भाइयों को ''ढूंढ़ना'' नहीं था। पौलुस और उसके साथियों के सूर में रहते समय पौलुस के कार्यक्रम की बात पतुलिमयिस में पहुंच गई होगी। [25]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पाठ ''निर्धनों को स्मरण रखें'' में 20:4 पर नोट्स देखिए। [26]विभिन्न संस्कृतियों में आतिथ्य सत्कार तथा जबरदस्ती के विषय में विचार अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए इन्हें विभिन्न क्षेत्रों के हिसाब से लागू किया जाना चाहिए। मसीही लोगों को चाहिए कि वे साथी मसीहियों पर अपने आपको थोपें *नहीं* (नीति वचन 25:17), बल्कि मसीही लोगों को पहुनाई करने वाले लोग होना *चाहिए* (इब्रानियों 13:2)। [27]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' में पृष्ठ 155 पर प्रेरितों 10:1 पर नोट्स देखिए। [28]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 184 पर मानचित्र देखिए। लूका ने यह नहीं बताया कि वे समुद्र से गए या थल मार्ग से। [29]शास्त्र में उल्लिखित समयों के अलावा (9:30; 18:22), सीरिया के अंताकिया से यरूशलेम जाते तथा आते समय पौलुस कैसरिया में गया होगा। [30]लूका ने ''बहुत दिन'' कहा। इन दिनों का अनुमान छह से आठ दिन लगाया जाता है।

[31]कई लोग प्रेरितों 7 अध्याय वाले सात पुरुषों को ''पहले डीकन'' कहते हैं। लूका ने उन्हें केवल ''सातों'' कहा। [32]जिन दिनों मैं छोटा था, उस समय एक स्थान पर रहने वाले ''प्रचारक'' की तुलना में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए घूमने वाले को ''इवैंजलिस्ट'' कहा जाता था। स्पष्टत:, फिलिप्पुस को कैसरिया में रहते हुए बीस से अधिक वर्ष हो चुके थे और वह अभी भी ''सुसमाचार प्रचारक'' अर्थात इवैंजलिस्ट के रूप में ही प्रसिद्ध था। [33]इस विवरणात्मक शब्द की तुलना ''यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले''; ''शमौन चर्मकार'' आदि से कीजिए। [34]सुसमाचार प्रचार के लिए पूरा समय देने वाले को ''इवैंजलिस्ट'' कहना मुझे सबसे अच्छा लगता है। मुझे, यह शब्द ''प्रचारक'' या ''सेवक'' से अधिक प्रभावशाली लगता है। [35]ऐसा कोई संकेत नहीं है कि लूका इस तथ्य में यह सुझाव दे रहा हो कि उन्होंने विशेष तौर पर पवित्र रहकर अलग रहने के लिए विवाह नहीं करवाया था अर्थात ये ''पहली ननें'' (नन रोमन कैथोलिक में प्रचारक स्त्रियों को कहा जाता है) *नहीं* थीं। [36]''प्रेरितों के काम, भाग-1'' की शब्दावली में पृष्ठ 199 पर शब्द ''भविष्यवक्ता'' देखिए। [37]1 तीमुथियुस 2:12 भी देखिए। [38]लूका की टिप्पणी कोई विशेष महत्व न देने के लिए केवल एक चश्मदीद गवाह द्वारा जोड़ी गई हो सकती है। [39]लूका ने पौलुस के रोम में होने के साथ समाप्त किया, इसलिए सम्भवत: वह फलस्तीन में पौलुस की कैद के दौरान उसके पास ही था। इस कारण उसने अधिकतर समय कैसरिया में या उसके आसपास ही बिताया। [40]पुराने नियम के उदाहरणों के लिए, देखिए 1 राजा 11:29-31; 22:11; यशायाह 20:2-4; यिर्मयाह 13:1-11; 27:1-11; 28:1-17; यहेजकेल 4; 5:1-4; जकर्याह 11:7-14.

[41]यह चमड़े की बैल्ट या कपड़े की पट्टी होती थी जिसे कुर्ते आदि को ''बांध'' कर शरीर के साथ चिपकाए रखने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। इसे कमरबंद भी कहा जा सकता है। [42]निश्चय ही, पौलुस यरूशलेम में नहीं मरा; परन्तु यदि प्रभु की इच्छा होती तो वह मरने के लिए तैयार था। इससे मिलते-जुलते वाक्यांश के लिए, एस्तेर 4:16 में एस्तेर के शब्द देखिए। [43]मैं यह नहीं कह रहा कि आपको अपने मित्रों, विशेषकर मसीही मित्रों की सलाह तथा परामर्श पर कभी ध्यान नहीं देना चाहिए (नीतिवचन 24:6)। पहले, पौलुस आमतौर पर अपने उन मसीही मित्रों की बात सुनता था जो खतरनाक परिस्थितियों से दूर रहने का आग्रह करते थे (उदाहरण के लिए, 19:30, 31)। परन्तु इस अवसर पर, पौलुस के मित्र उसे परमेश्वर की आज्ञा तोड़ने के लिए कह रहे थे। कभी भी किसी को, उस बात से मना करने की इजाजत न दें जो *परमेश्वर* चाहता है। चाहे वह आपका घनिष्ठ मित्र ही क्यों न हो। [44]''प्रेरितों के काम, भाग-4'' के पृष्ठ 107 पर प्रेरितों 18:21 पर नोट्स देखिए। [45]किसी दूसरे द्वारा आरम्भ किए काम को किसी अन्य व्यक्ति द्वारा पूरा करने और उसके भयानक परिणामों को दिखाने के लिए एक व्यक्तिगत उदाहरण का इस्तेमाल किया जा सकता है। साधारणतया, जिन्हें काम ''पूरा'' करने के लिए कहा जाता है उनमें वह काम करने की उतनी इच्छा नहीं होती जितनी उस काम को आरम्भ करने वाले में थी। [46]कुप्रुस वह टापू था जहां से पौलुस व बरनबास ने

पहली मिशनरी यात्रा आरम्भ की थी। मनासोन स्पष्टत: एक यूनानी भाषा बोलने वाला यहूदी था जो किसी फलस्तीनी यहूदी की अपेक्षा पौलुस तथा अन्य जातियों को अपने घर में बुला सकता था।[47]केवल यहां ही हम मनासोन के बारे में पढ़ने को मिलता है। लूका ने शायद यह संकेत देने के लिए कि वह यरूशलेम नगर में एक घर की कलीसिया के आरम्भिक सदस्यों में से एक था ''एक पुराने चेले'' का उल्लेख किया। शायद लूका ने उसका उल्लेख इसलिए किया क्योंकि वह लूका के दोहरे इतिहास के लिए एक स्रोत था (लूका 1:3) यह बिना किसी महत्व के केवल विवरण देने के लिए हो सकता है।[48]सम्भवत: इसके लिए प्रबन्ध कैसरिया में पौलुस तथा अन्यों के ''बहुत दिन'' ठहरने के समय कर लिए गए थे (आयत 10)। आयत 16 में कुछ कठिनाइयां आती हैं। कुछ प्राचीन लेखों में संकेत मिलता है कि मनासोन यरूशलेम से कैसरिया में आया और फिर उनके साथ यरूशलेम वापस चला गया (देखिये KJV)कई प्राचीन लेखों में सुझाव मिलता है कि ये यात्री यरूशलेम के मार्ग में मनासोन के साथ रातभर रुक गए। इन भिन्नताओं से कहानी का संदेश खत्म नहीं होता।[49]ऐसे पर्वों पर अन्य जातियों का आना कोई नई बात नहीं थी (यूहन्ना 12:20)। मंदिर के बाहर के विशाल आंगन को ''अन्य जातियों का आंगन'' कहा जाता था। फिर भी, जब तक कोई अन्य जाति ''परमेश्वर का भय मानने वाला'' और यहूदी मत धारण करने को तैयार न हो, तब तक यरूशलेम में उस पर संदेह किया जाता था।[50]बाद में पौलुस के भानजे का उल्लेख है (23:16), इसलिए कई लोग अनुमान लगाते हैं कि यरूशलेम में पौलुस की बहन का अपना घर था और पौलुस उसके साथ रहा होगा। इन दोनों में से कौन सी बात सही है, हम नहीं जानते।

[51]लूका 9:53; 13:33; 18:31; 19:11, 28 भी देखिए।